Samyak
An Institute For Civil Services

RAS - 23 MAINS TEST SERIES

सिद्धि-II - 005

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 200**

प्रशासकीय नीतिशास्त्र
Administrative Ethics

Paper - IInd Unit - I

Name :		MARKS	
Enroll. No.:	Part	Attempted Questions	Marks Obtained
Date of Birth :	Part - A	24	31
Medium : Hindi	Part - B	14	33.25
E-mail :	Part - C	07	31
Exam Date : 3 march 2024.	Total	45	95.25
Invigilator's Signature :			
ECN: / RCN:	Hindi: 0		English: 0

अनुदेश (Instructions)

1. परीक्षा शुरू होने से पहले पुस्तिका को जाँच लें।
   Please check the booklet before commencement of the exam.
2. अंक योजना प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दी गई है।
   The marking scheme is given at the start of every section.
3. अभ्यर्थियों को उत्तर निर्धारित शब्द सीमा से अधिक नहीं लिखना चाहिए, इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं।
   Candidates should not write more than the prescribed word limit in answers, violating this may result in deduction of marks.
4. अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रश्नोत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर ही लिखें। बॉर्डर लाईन से बाहर प्रत्युत्तर नहीं लिखें। बॉर्डर लाईन के बाहर लिखे गये उत्तर को जाँचा नहीं जायेगा।
   Candidates are directed to write answers only in the prescribed space of booklet. They should not write answer outside the border line. Answer written outside the border line will not be checked.

SAMYAK, Near Riddhi Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur, 9875170111
Test Series Helpline & Whatsapp - 9414988860, Email Id - samyaktestseries@gmail.com

	REVIEW PARAMETERS	SCALE			
		Good	Above Average	Average	Below Average
1.	DOES THE ANSWER ADDRESS THE DEMAND OF THE QUESTION?		✓		
a.	Answer Relevancy		✓		
b.	Answer Enrichment points like use of: · Key Terms/ Subject Vocabulary. Use of Commission/ report/ government publication/ judgements, etc. Association with the Current Affairs and use of examples to explain the concept and idea	✓	✓		
2.	HOW WELL IS THE ANSWER PRESENTED?		✓		
a.	Structure - Intro, Body, Conclusion	✓			
b.	Presentation – Using Subheadings/ points/ highlighting/ flowcharts/ diagrams/ maps		✓		
c.	Language & Grammar				✓
d.	Word limit	✓			

Detailed Comments / Feedback / Suggestions for Improvement
विस्तृत टिप्पणियाँ/फीडबैक/सुधार के लिए सुझाव :-

1. निर्धारित कॉलम में उचित प्रारूप के साथ
2. टू द पॉइन्ट उत्तर लिखे।
3. प्रश्न की मूल मांग को समझे।
4. गलत तथ्य लिखने से बचे।
5.
6. प्रयास बहुत अच्छा है।
7. हिन्दी तथा अंग्रेजी वाले खण्ड पर कार्य
8. करे।
9.
10.
11.

ALL the Best!

⊙ Attempt all question.

⊙ Presentation of answer is good.

⊙ focus on 10-mark question

Part - A

Note : Answer the following questions in 15 words. Each question carries 2 marks.

नोट : निम्न प्रश्नों के उत्तर 15 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. कन्फ्यूशियस के अनुसार नैतिक जीवन के संचालन के मूल सिद्धान्तों का नाम लिखिए।
   According to Confucius, write the name of the basic principles of conducting moral life.

(Write above this line only)

2. बेंथम द्वारा प्रतिपादित 'सुख मापक यंत्र/सुखवादी परिगणना' के आधारों को लिखिए।
   Write the basis of 'happiness measuring instrument/hedonic calculation' propounded by Bentham.

बेंथम द्वारा सुखवादी परिगणना के सात आधार बताए हैं — $1\frac{1}{2}$

(1) उत्पादकता (2) निकटता (3) निश्चितता (4) तीव्रता

(5) व्यापकता (6) अवधि (7) शुद्धता

कार्य से उत्पन्न सुख की मात्रा

(Write above this line only)

3. कांट के मतानुसार नैतिकता की पूर्वमान्यताएँ कौनसी हैं?
   According to Kant, what are the presuppositions of morality? $1\frac{1}{2}$

नैतिकता की पूर्वमान्यताएँ —

(1) संकल्प की स्वतंत्रता

(2) आत्मा की अमरता

(3) ईश्वर का अस्तित्व

परिणाम निरपेक्ष वादी दार्शनिक

(Write above this line only)

4. "शैक्षणिक संस्थानों में 'पाठयक्रम सहगामी क्रियाएँ' मूल्य विकसित करने में सहायक होती हैं।" स्पष्ट कीजिए।
"Co-curricular activities' are helpful in developing values in educational institutions." Explain-

1½

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ यथा - खेल-कूद → टीम निर्माण, अनुशासन
जीत पर अतिउत्साहित ना होना, पराजय पर संयमित रहना।

ईमानदारी सच्चाई शौर्य व सहनशीलता

विवाद → स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, आत्मविश्वास, ज्ञान का विकास
शैक्षिक भ्रमण → समन्वय, देश की विविधता की जानकारी, जैसे
मूल्यों का विकास होता है। प्रार्थना → ईश्वर के प्रति कृतज्ञता।

(Write above this line only)

5. मूर द्वारा प्रतिपादित 'प्रकृतिवादी तर्कदोष' की अवधारणा को स्पष्ट करें।
Explain the concept of 'Naturalist Fallacy' propounded by Moore.

2

मूर → पुस्तक "प्रिंसिपिया इथिका" मे प्रकृतिवादी तर्कदोष की अवधारणा दी

शर्तें ⇒

① जब किसी गुणात्मक (मूल्यात्मक कथन की व्याख्या तथ्य के आधार पर की जाए तो प्रकृतिवादी दोष उत्पन्न होता है।

② जब सरल प्रत्यय को परिभाषित किया जाये। उदा० - शुभ को परिभाषित करने पर प्रकृतिवादी दोष उत्पन्न होता है।

(Write above this line only)

6. सुकरात के नैतिक दर्शन के अनुसार 'ज्ञान व सद्गुण के मध्य संबंध' को स्पष्ट कीजिए।
According to the moral philosophy of Socrates, explain the 'relationship between knowledge and virtue'.

1½

अनिवार्य व अभेद

सद्गुण ज्ञान की परिणति

सुकरात ने ज्ञान को ही एकमात्र सद्गुण माना है। उनके अनुसार किसी व्यक्ति को सही-गलत, उचित-अनुचित का ज्ञान होने पर वह गलत कार्य नहीं करता है। अर्थात् वह सद्गुणी होता है। ध्यान योग्य बात यह है कि यहा ज्ञान तथ्यात्मक जानकारी न होकर सही-गलत की सटीक जानकारी को सन्दर्भित करता है। ज्ञान व सद्गुण

(Write above this line only)

ज्ञान - आन्तरिक रूप

7. श्रीमद् भगवद्गीता में उल्लेखित 'आपद धर्म' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
Throw light on the concept of 'Apad-Dharma' mentioned in Srimad Bhagavad Gita.

1 1/4

परहितार्थ स्वधर्म से परे कार्य करना

श्रीमद् भगवद्गीता मे आपद धर्म → किसी विशेष परिस्थिती में किसी व्यापकतम भले के लिए कुछ गलत करना भी अवसही है।
जैसे → "किसी महिला द्वारा भुखे बच्चे के लिए रोटी चुराना।"
गीता में इसे अपवाद की स्थिती के रूप में बताया गया है। (जब गलत कार्य किसी को नुकसान न पहुंचाए)

(Write above this line only)

8. 'शुभ' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।
Explain the meaning of 'Shubha'.

1 1/4

मूल्यात्मक प्रत्यय
नैतिकता मापदण्ड

शुभ → जो लक्ष्य पूर्ति मे सहायक हो। सभी विचारधाराओं के अनुसार शुभ ↓

सापेक्ष शुभ ← शुभ → निरपेक्ष शुभ
साध्य
जो स्वयं साध्य है
यह अपरिमाणित होता है
अविश्लेषित
साधन
जो साध्य प्राप्ति मे साधन हो
आचरण नैतिक गुण

कांट → कर्तव्य चेतना से किया गया कार्य शुभ है।
गीता → स्वधर्म अनासक्ति भाव करना।
उपयोगितावादी → अधिकतम व्यक्तियो का अधिकतम सुख

(Write above this line only)

9. बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वहन किये जाने वाले 'दस कुशल कर्म' को उल्लेखित कीजिए।
Mention the 'ten percepts' to be performed according to Buddhism.

1

सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, मध्यम मार्ग,
सहअस्तित्व, अस्वाद, सम्यक ज्ञान, सम्यक दृष्टि,

उद्देश्य → जीवन के उद्देश्य को जानना।
→ संयमित जीवन जीना
→ दुःख निवारण

चोरी नहीं करना
झूठ नहीं बोलना
ईर्ष्या नहीं करना।

(Write above this line only)

10. 'स्यादवाद' पर टिप्पणी लिखिए।
Write note on 'Syadvada'.

1 1/2

प्रवर्तक महावीर

स्यादवाद → "सापेक्षता का सिद्धान्त"
ज्ञान का काल, परिस्थिती के अनुसार परिवर्तन होना।

अनेकांतवाद तथा सप्तभंगी सिद्धांत

स्यादवाद — जैन धर्म का मुख्य सिद्धान्त। उसके अनुसार ज्ञान सापेक्ष है। अर्थात् जो एक के लिए सही है वह दूसरे के लिए गलत भी हो सकता है। उदा० → जैन धर्म में 'अहिंसा' परमधर्म है वही इस्लाम धर्म में — मांसाहार स्वीकृत है।

(Write above this line only)

11. प्लेटो का 'न्याय' किस प्रकार राजनीतिक समाज के निर्माण में सहायक है?
How is Plato's 'Justice' helpful in building political society?

1 1/2

न्याय → विवेक, साहस, संयम → कौशल सद्गुण

सामान्य हित पूर्ति

प्लेटो ने समाज को तीन वर्गों में बांटा

① नीति निर्माण → विवेक
② रक्षा करना (योद्धा वर्ग — सेना, पुलिस) → साहस
③ उत्पादक वर्ग (व्यापारी, कृषक) → संयम

जब ये तीनो वर्ग स्वधर्म का पालन एक-दूसरे के कार्य में बिना हस्तक्षेप किये करते है। तो एक सर्वोच्च सद्गुण 'न्याय' की स्थापना होती है। समाज में न्याय की स्थापना होगी।

(Write above this line only)

12. राजनीतिक अभिवृत्ति
Political attitude

1

→ राजनीतिक दल तथा नीतियाँ
→ राजनीतिक सोच
→ मतदान व्यवहार

ह द पोस्ट संक्षिप्त लिखें

किसी राजनीतिक विचार, मत, दल को लेकर की गई भावनात्मक (कुंठा) (कल्पना) अभिवृत्ति (नकारात्मक एंव सकारात्मक) संज्ञानात्मक (पक्ष में मत / विपक्ष में मत) एंव व्यवहारात्मक अभिवृत्ति को सम्मिलित रूप से राजनीतिक अभिवृत्ति कहते है।

भावनात्मक → उस राजनीतिक विचार के प्रति आपके मन में कैसा भाव है।

संज्ञानात्मक → विशेष राजनीतिक विचार के प्रति आपको क्या जानकारी है। (Write above this line only)

व्यवहारात्मक → आप उसको लेकर कैसी प्रतिक्रिया करते है।

13. श्रीमद् भगवद्गीता में उल्लेखित 'लोकसंग्रह' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिये।
Explain the meaning of 'Loksangraha' mentioned in Srimad Bhagavad Gita.

1/2

लोकसंग्रह → 'लोक-कल्याण' (स्वहित की जगह परहित को वरियता देना)
जब स्वयं के कार्यों को निष्पादन उस प्रकार हो कि उसका
परिणाम जनकल्याण सुनिश्चित करे 'लोकसंग्रह' है।

→ स्वहित पर
→ अनासक्ति
→ बिना फल की इच्छा कर्म

(Write above this line only)

14. किन्हीं चार नैतिक सम्प्रत्ययों के नाम लिखिए।
Write the name of any four moral concepts.

1

नैतिक सम्प्रत्यय → (1) निष्काम कर्मयोग
(2) सर्वोदय / अन्त्योदय
(3) स्वकर्तव्य पालन
(4) दरिद्र सेवा (5) सत्यनिष्ठा।

शुभ - अशुभ
उचित - अनुचित

(Write above this line only)

15. 'बौद्ध दर्शन का प्रतीत्य समुत्पाद'
'The Pratityasamutpada of Buddhist philosophy'

1

"प्रत्येक कार्य का कुछ कारण अवश्य होता है"
प्रतीत्य समुत्पाद - यह बौद्ध धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त है।
यह कार्य कारण सिद्धान्त पर आधारित है।
कृतप्रणाश : → "किया हुआ कभी नष्ट नहीं होता"।
अकृतभ्युपगम → बिना कुछ किए कुछ प्राप्त नहीं होता है।

समुत्पाद
↓
12 क्रम

(Write above this line only)

[प्रशासन के संबंध में → लोक ऋण की अवधारणा भी प्रचलित है]

16. ऋण
Rin

2 टू द पोइन्ट लिखे।

मनुष्य अपने जीवन में अपने माता-पिता, पितरो, गुरुओ (शिक्षा देने हेतु) एवं देवताओ के प्रति ऋणी होता है इस ऋण से उऋण होने के लिए (प्राकृतिक व्यवस्था हेतु) वेदो मे तीन ऋणो को चुकाने की बात की गई है। ① पितृ ऋण → संतान उत्पन्न कर → पितरो का श्राद्ध करके ② ऋषि ऋण → शास्त्र अध्ययन एवं अध्यापन ③ देव ऋण → यज्ञ हवन करके देवताओ स्तुति करके

निर्धारित काल में ही लिखे

(Write above this line only)

17. 'व्यक्ति स्वेच्छा से बुरा नहीं होता।'' उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।
"A person does not become bad voluntarily." Explain the above statement.

1

इस पंक्ति की व्याख्या 'गाँधीजी के दर्शन' के सन्दर्भ मे → गाँधीजी के अनुसार कोई व्यक्ति स्वेच्छा से बुरा नहीं होता। जब उसके अन्दर ईश्वरीय अंश। (प्रत्येक मनुष्य मे ईश्वर है) अचेतन अवस्था मे चला जाए तो वह बुरे कार्यो मे संलिप्त हो जाता है। इसे दूर करने के लिए 'सत्याग्रह' ही मार्ग है। अरस्तू के अनुसार भी "गरीबी अपराध एवं क्रांति का कारण होती है"

सुख प्राप्ति शुभ कर्मो पर निर्भर

(Write above this line only)

18. सद्गुणों की विशेषताएँ लिखिए।
Write the characteristics of virtues.

$1\frac{1}{2}$

स्वकर्तव्य पालन → सद्गुणो का विकास → चरित्र की उत्कृष्टता

① ये जन्म आधारित नहीं होते इन्हे अर्जित किया जाता है।
② सद्गुणो की अभिव्यक्ति व्यवहार मे होती है।
③ मूल्यो के निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति मे सद्गुणो का विकास होता है।
④ ये आत्मनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ दोनो प्रकार के होते हैं।
⑤ कर्तव्य सद्गुण का आन्तरिक पक्ष है।
⑥ सद्गुणो के उदा० → न्याय, विवेक, सत्यनिष्ठा, साहस, वस्तुनिष्ठा, जवाबदेहित

शब्द सीमा का ध्यान रखे

(Write above this line only)

19. महात्मा गांधी के 'एकादश व्रत' पर टिप्पणी लिखिए।
Write comment on Mahatma Gandhi's 'Eleven Vows'. 2

एकादश व्रत पालन का उद्देश्य → सामाजिक समरसता, जीवन की उद्देश्य की प्राप्ति
↳ रामराज्य की स्थापना, संघर्ष से पहले दान

एकादश व्रत → ① सत्य ② अहिंसा ③ अस्तेय ④ अपरिग्रह
⑤ ब्रह्मचर्य ⑥ सर्वधर्मसमभाव ⑦ अस्वाद ⑧ स्वदेशी
⑨ अभय ⑩ सहअस्तित्व ⑪ स्वच्छता

(Write above this line only) 1 1/2

20. निष्पक्षता के आधारभूत घटकों को उल्लेखित कीजिए।
Mention the basic components of impartiality.

उदा० → मैसूर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर कुवेम्पु द्वारा अपने पद का प्रयोग अपने बेटे को पास करने में न किया जाना

① सत्यनिष्ठा → स्वयं का मूल्यांकन सही सिद्धान्तों के आधार पर जिनपर अन्य भी
② वस्तुनिष्ठता → सभी को एक ही चश्मे से देखना
③ पारदर्शिता ④ जवाबदेहिता (आत्मनियंत्रण का स्थापना)
⑤ निस्वार्थ ⑥ समरसता ⑦ नैतिक आचार संहिता ⑧ राजनीतिक तटस्थता

(Write above this line only)

21. 'अरस्तु के गोल्डन मीन सिद्धान्त' पर टिप्पणी लिखिए।
Write comment on 'Aristotle's Golden Mean Theory'.

(Write above this line only)

कालम तथा प्रारूप का ध्यान

22. 'प्रशासन में जनसहभागिता' की धारणा को स्पष्ट कीजिए।
Explain the concept of 'public participation in administration'.

उद्देश्य → सुशासन की स्थापना। राजनीतिक लोकतंत्र के साथ सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना

$1\frac{1}{4}$

भाई भतीजावाद

प्रशासन में जनसहभागिता से आशय → शासन की नीतियों, प्रस्तावों कार्यक्रमों में आमजन की सहमती एवं उन नीतियों की वास्तविक स्थिती से तुलना जनसामान्य द्वारा। उदा० कम्पनी अधि० की धारा-135 के तहत CSR की संकल्पना, मनरेगा की धारा 17 के तहत सामाजिक अंकेक्षण खाद्य सुरक्षा अधिनियम में भी सामाजिक अंकेक्षण को शामिल किया गया है।

प्रशासन में जन सहभागिता, शासन जन केन्द्रित, भ्रष्टाचार मुक्त

(Write above this line only)

23. निर्णय प्रक्रिया में नैतिकता को बढ़ावा देने वाले कारकों के नाम लिखिए।
Name the factors that promote ethics in the decision making process.

$1\frac{1}{2}$

निर्णय प्रक्रिया में नैतिकता को बढ़ावा देने वाले कारक

① नैतिक मूल्यों की जानकारी ② निर्णय के परिणामों के प्रति सजगता (दूरदर्शिता) ③ परानुभूति ④ सत्यनिष्ठा (जनता के विश्वास ↑↑) ⑤ जोखिमों का आंकलन ⑥ जनसहभागिता की सुनिश्चितकरना। ⑦ वातावरण अनुकूलता ⑧ केवल शक्ति के प्रयोग पर ध्यान न देकर जनता की अपेक्षाओं को भी महत्व

कर्तव्य बोध, लोक सेवा, गांधी भाव, जन सहभागिता

(Write above this line only)

24. अष्टांगिक मार्ग
Eightfold Path

2

बौद्ध दर्शन में चार आर्य सत्य में दुःख निवारण के मार्ग के रूप में अष्टांगिक मार्ग की संकल्पना दी गई है जो निम्न है –

① सम्यक् ज्ञान ② सम्यक् व्यायाम ③ सम्यक् वाक् ④ सम्यक् समाधि ⑤ सम्यक् दृष्टि ⑥ सम्यक् अभ्यास ⑦ सम्यक् विराम, ⑧ सम्यक् संकल्प

(Write above this line only)

25. वैदिक परम्परा में उल्लेखित कर्मों पर टिप्पणी लिखिए।
Write comment on the karmas (deeds) mentioned in the Vedic tradition.

(Write above this line only)

Part - B

Note : Answer the following questions in 50 words. Each question carries 5 marks.
नोट : निम्न प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है।

1. सर्वोदय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसकी सीमाएँ बताइये।
Explain the concept of Sarvodaya and explain its limitations.

2 1/2

जॉन रस्किन
unto the Last

सभी का सभी प्रकार (नैतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक सामाजिक आदि) से उदय सर्वोदय है। ये अवधारणा अन्य विचारो से अधिक व्यापक है जैसे - मार्क्स ने केवल मजदूर वर्ग के उदय की बात की, उपयोगिकतावादियों ने अधिकतम व्यक्तियों के सुख की बात की वही सर्वोदय सभी के उदय को संदर्भित करता है।

सीमाएँ → ① एक आदर्श स्थिती है। सर्वोदय व्यवहार मे होना प्रतीत नही होता ② योग्यतम के प्रयासो के अनुरूप परिणाम न मिलना वही अयोग्य का भी उदय ③ प्रयत्न को /प्रतिस्पर्धा हतोत्साहित करता है।

निष्कर्ष: सर्वोदय अन्त्योदय को संकल्पित करता है। वर्तमान समाज मे बढ़ती आर्थिक असमानता, भेदभाव को दूर करके यह के लिए एक मार्ग बन सकता है।

उच्च आदर्श एवं नैतिक उपस्थिति आवश्यक
भावनात्मक अवधारणा
औद्योगीकरण
उपभोक्तावादी संस्कृति।

(Write above this line only)

2½

2. किसी व्यक्ति की राजनीतिक अभिवृति को प्रभावित करने वाले कारकों को उल्लेखित कीजिए।
Mention the factors influencing the political attitude of a person.

अर्थ ? परिभाषा राजनीतिक दल उद्देश्य एवं कार्य कारक ↓ समूह लगाव आर्थिक दबाव मीडिया सिविल सोसायटी

राजनीतिक विचार, दल के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक रवैया राजनीतिक अभिवृति है। उसको प्रभावित करने वाले कारक – (1) परिवार (परिवार में किसी विशेष राजनीतिक समूह के प्रति विशेष अभिवृति का होना)
(2) कार्य की दशाएं (3) आस-पास का माहौल (4) स्वयं के निजी मूल्य एवं सिद्धान्त
(5) पूर्वाग्रह (6) भौतिकवादी संस्कृति (7) प्रशासन में उच्चतर अधिकारियों की अभिवृति (8) सोसल मिडीया (इंटरनेट, प्रिंट मिडीया, रेडियो) (9) धार्मिक विचारधारा।

निष्कर्ष → व्यक्ति में किसी भी अभिवृति को विकसित होने मे उसके अनुभव, विचार शिक्षा एवं धार्मिक मान्यताओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

(Write above this line only)

3. सामाजिक न्याय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए विभिन्न दार्शनिकों के अनुसार सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों को उल्लेखित कीजिए।
While clarifying the concept of social justice, mention the principles of social justice according to various philosophers.

3½

निर्धारित कॉलम में उचित प्रारूप के साथ लिखें।

समाज में व्याप्त संसाधनों पर सभी का समान अधिकार एवं कमजोर वर्गों हेतु विशेष आरक्षण सामाजिक न्याय है।

* सुकरात → ज्ञान के साम्राज्य की स्थापना। सामाजिक न्याय है।
* प्लेटो → समाज में अहस्तक्षेप का सिद्धान्त (विवेक, साहस, संयम) सामाजिक न्याय
* अरस्तू → जब लोकतंत्र में उच्चतम पद पर कोई पीछड़े वर्ग का आदमी आसीन होगा तब सामाजिक न्याय स्थापना होगी।
* जॉन रॉल्स → समाज में समानता की स्थापना (विशेषाधिकारों का त्याग)
* भीमराव अम्बेडकर → संविधान के प्रावधानों के पालन से सामाजिक न्याय स्थापित
* गाँधीजी – सर्वोदय सामाजिक न्याय है।

निष्कर्ष → उपर्युक्त सभी दार्शनिक सामाजिक न्याय हेतु चाहे मार्ग (साधन) अलग-अलग बताए परन्तु सभी का साध्य समानता ही है।

(Write above this line only)

2 1/2

4. सिविल सेवा के सन्दर्भ में आधारभूत मूल्यों को परिभाषित करते हुए उन मूल्यों के नामोल्लेखित कीजिए।
While defining the basic values in the context of civil service, name those values.

(a) ~~सत्यनिष्ठा~~ ⇒ ऐसे मूल्य जो किसी समाज के न्यायसंगत संचालन मे अहम हो आधारभुत मूल्य होते है। जैसे –

नोलन के अनुसार →

① सत्यनिष्ठा ② वस्तुनिष्ठा ③ खुलापन ④ जवाबदेहिता

⑤ निस्वार्थता ⑥ ईमानदारी ⑦ नेतृत्व

अन्य महत्वपूर्ण मूल्य ⇒ जनसहभागिता, परानुभुति, अभिप्रेरणा, निष्पक्षता, राजनीतिक तटस्थता, करुणा, दया, समरसता, लोकसंग्रह

निष्कर्ष ⇒ सिविल सेवा मे आधारभुत मूल्य होने से जनता मे प्रशासन के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है। जो सुशासन की स्थापना करता है। अतः ये मूल्य शासन मे मूलभूत है।

(Write above this line only)

जिन मूल्यों की पालना अनिवार्य रूप से

करुणा गैर तरफदारी भेदभाव रहितता

5. "सर्वोदय की अवधारणा मार्क्सवाद से भिन्न है।" स्पष्ट करें।
"The concept of Sarvodaya is different from Marxism." Explain.

2

मार्क्सवाद → सर्वोदय

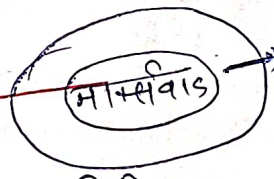

मार्क्सवाद → इस अवधारणा मे मार्क्स केवल मजदूर वर्ग की उन्नति एवं उदय की बात करता है तथा इसके लिए वह हिंसा को भी पवित्र/सही मानता है। यह अवधारणा पुंजीपति वर्ग के हितो के खिलाफ है तथा समाज मे उनके महत्व एवं अस्तित्व को अनदेखा करती है। वही सर्वोदय → यह व्यापक अवधारणा है जो पुंजीवाद और साम्यवाद मे समन्वय कर सभी के सभी प्रकार से उदय को संदर्भित करती है उसमे समाज के सभी वर्गों के हित संरक्षित होते है।

निष्कर्ष → मार्क्सवाद जहा केवल साध्य की पवित्रता को स्वीकार करता है वही सर्वोदय साधन एवं साध्य दोनो की पवित्रता पर बल देती है।

(Write above this line only)

दार्शनिक अंतर का आधार
साधन – साध्य
पद्धति
धर्म
राज्य
वर्गहीन समाज

2

6. गांधीजी के दर्शन में वर्ण-व्यवस्था के समर्थन के आधारों को बताइये।

Tell the grounds for supporting the caste system in Gandhiji's philosophy.

(ब्राह्मण) – (क्षत्रिय) – (शूद्र)

गाँधीजी के अनुसार व्यक्ति

स्वधर्म की पालन में सहायक

गाँधीजी भारतीयदर्शन के वर्णव्यवस्था को स्वीकार करते है। इसके निम्न कारण है- (1) गाँधीजी के अनुसार वर्णव्यवस्था श्रमविभाजन पर आधारित है (2) पारम्भिक उद्योग धंधो को बढावा देती है। परिवार में ही व्यक्ति मे कौशल का विकास होता है। (3) व्यक्ति को आजीविका के लिए भटकना नहीपडता (4) वे कर्म आधारित वर्णव्यवस्था को स्वीकार करते है (5) सामाजिक सहअस्तित्व बना रहता है (6) सभी कार्यों को बराबरी का दर्जा दिया जाना चाहिए।

वंशानुगत परिष्कृत श्रेष्ठता निम्नता स्थायी श्रम विभाजन

निष्कर्ष → गाँधीजी के अनुसार वर्णव्यवस्था का पालन यदि कर्म आधार पर किया जाए तो समाज मे समरसता की स्थापना होती है। वर्तमान मे इस व्यवस्था मे दोष उत्पन्न हो गया है इसके विघटन की बजाए उसमे सुधार किया जाना चाहिए

(Write above this line only)

7. "सुखवादी गणना नितान्त अव्यवहारिक है।" उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

"Hedonic calculation is completely impractical." Explain the above statement.

2 1/4

निश्चित वस्तु नहीं एक अनुभूति सुख मापित लोगों को वितरण तीव्रता कम हो जाती है

सुखवादी गणना → यह सुख को परम शुभ मानती है तथा सुख मे गुणात्मक एवं मात्रात्मक भेद करती है।

→ सुख को मापा नही जा सकता यह अमूर्त होता है।

→ अत्यधिक सुख की चाह होने पर वास्तव मे सुख की प्राप्ति नही होती।

→ सुखवादी गणना मे नैतिक अंकुश की बात की गई है। → दबाव मे किए हुए कार्यों को नैतिक नही माना जाता है।

→ मनोवैज्ञानिक सुख और परार्थमूलक सुख एक-दूसरे के विरोधाभासी है।

निष्कर्ष : उपयोगितावादी द्वारा दी गई सुखवाद की गणना उसकी व्यापकता, निकटता एवं शुद्धता के आधार पर दी गई है जिसे हम पूर्ण रूप से नकार नही सकते

(Write above this line only)

7 1/4

8. प्रशासनिक नीतिशास्त्र की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसमें समावेशित किए जाने वाले तत्वों को लिखिए।
Explaining the concept of administrative ethics, write the elements to be included in it.

समाज मे जनकल्याण एवं न्याय को सुनिश्चित करने हेतु प्रशासको के लिए बनाई गई नियमावली प्रशासनिक नीतिशास्त्र है। जो प्रशासक को विशेष परिस्थितियो मे निर्णय लेने हेतु मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रशासनिक मानको का अध्ययन

(1) सत्यनिष्ठा → उदा० → भारतीय रेलवे द्वारा शुरू 'मिशन सत्यनिष्ठा'

सही-गलत

(2) ईमानदारी (3) जवाबदेहिता (उदा० - SLV I के असफल होने पर सतीश धवन (चेयरमैन) द्वारा जिम्मेदारी लेना।)

नैतिक - अनैतिक

(4) निस्वार्थ (5) परानुभूति (6) नवाचार (7) अभिप्रेरणा (8) साहस

अच्छे / बुरे

(9) राजनैतिक तटस्थता (10) पारदर्शिता

कार्य कुशलता

निष्कर्ष - प्रशासकीय नैतिक मूल्य समाज मे लोकतंत्र एवं न्याय को सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है क्योकि सभी योजनाओ। नीतियो का क्रियान्वयन प्रशासक द्वारा ही होता है।

अनामत

(Write above this line only)

9. रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार मानव स्वरूप के पक्षों को नामोल्लेखित करते हुए उन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
According to Rabindranath Tagore, name the aspects of human nature and write short note on them.

(Write above this line only)

2

10. शासन में भेदभावहीनता एवं राजनैतिक गैर-तरफदारी से होने वाले लाभों को लिखिए।
Write the benefits of non-discrimination and political non-partisanship in governance.

लाभ

शासन मे भेदभावहीनता → ① अस्पृश्यता निवारण (अनु' 17 ') संविधान

प्रत्यक्ष ② समाज मे समानता, बंधुता समरसता की स्थापना होगी

अप्रत्यक्ष ③ राजनीतिक लोकतंत्र के साथ सामाजिक लोकतंत्र भी सुनिश्चित

कार्य ④ मनुष्य का मनुष्य के रूप मे सम्मान ⑤ सभी के अधिकारों की रक्षा

कुशलता वृद्धि

राजनीतिक गैर तरफदारी → ① योजनाओ, नीतियो का लाभ वास्तविक लाभार्थियो तक ② राजनीति के अपराधीकरण पर रोक

हस्तक्षेप कमी

भेदभाव विहिन

③ शासन की वास्तविक शक्ति जनता मे निहीत होगी ④ सत्यनिष्ठा

प्रतिबद्धता

⑤ न्यूनतम सरकार अधिकतम शासन ⑥ सहभागितापूर्ण प्रतिस्पर्धी शासन

लोकतंत्र

⑦ जनसहभागिता बढेगी।

(Write above this line only)

11. मानवीय मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
Explain the role of society in the development of human values.

$2\frac{1}{4}$

नीति मीमांसीय

समाज मनुष्य की द्वितीय पाठशाला होता है तथा यह व्यक्ति

व्यवहारिक के साथ जीवन पर्यंत रहता है इसलिए सामाजिक मूल्य अपेक्षाकृत स्थायी

शिक्षण प्रकृति के होते है।

संस्थानो से प्राप्ति

समाज

सकारात्मक मूल्य	नकारात्मक मूल्य
① सामाजिक सहअस्तित्व	① सम्प्रदायिकता
② संस्कृति रीति रिवाजो के प्रति सजगता	② क्षेत्रवाद, जातिवाद, लिंगभेद
③ समानता, स्वतंत्रता, भागीदारी	③ भ्रष्टाचार
④ टीमनिर्माण, साझा उद्देश्य	④ मूल्यो मे विरोधाभास होने से नैतिक मूल्यो के प्रति शंका
⑤ अनुशासन

संभव

मानव पारस्परिकता

सौहार्द

सहयोग

साझा मूल्य

देशप्रेम

(Write above this line only)

12. **किसी व्यक्ति के नैतिक कर्त्तव्यों की पालना में 'ऋण' की धारणा किस प्रकार उपयोगी हो सकती है, समझाइये।**
Explain how the concept of 'Rin' can be useful in fulfilling the moral duties of a person.

2/4

वैदिक अवधारणा
ऋण की धारणा — ① पितृ ऋण ② ऋषि ऋण ③ देव ऋण — उद्देश्य
~~जिस प्रकार~~ वैदिक अवधारणा में ऋण को चुकाना आवश्यक था — उऋण
तथा इन ऋणों से उऋण होने की प्रक्रिया में व्यक्ति का विकास होना
होता था जैसे → ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए अध्ययन एवं — विवरण
अध्यापन आवश्यक है इससे व्यक्ति में बुद्धि एवं विवेक का विकास होता है। लिखें
पितृ ऋण से उऋण होने हेतु माता-पिता की सेवा एवं पूर्वजों का श्राद्ध इससे
व्यक्ति में बड़ों के प्रति सम्मान एवं करुणा दया जैसे मूल्यों का विकास
देव ऋण - यज्ञ → प्रकृति शुद्धता, पर्यावरण संरक्षण
वर्तमान में प्रशासन में लोक ऋण ~~की~~ भी संकल्पना जिससे उऋण होने के लिए
जनकल्याण करना आवश्यक है → समाज में न्याय की स्थापना।

(Write above this line only)

13. **'राजनीतिक सामाजीकरण' को परिभाषित करते हुए इस पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**
Define 'political socialization' and write short note on it.

(Write above this line only)

2

14. "प्लेटो के न्याय की अवधारणा विधिगत न होकर नीतिगत है।" उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

"Plato's concept of justice is not legal but ethical." Explain the above statement.

प्लेटो की न्याय की अवधारणा अहस्तक्षेप के सिद्धान्त पर आधारित है तथा इसमें प्रत्येक निर्णय कर्ता वर्ग को विवेक से कार्य करने को कहा गया है परंतु विवेक केवल निर्णयकर्ता के पास हो ऐसा जरूरी नहीं है अन्य वर्ग भी इन निर्णयों के औचित्य को अपने विवेक के आधार पर परख सकते हैं क्योंकि इनका प्रभाव इन पर भी पड़ता है। साथ ही प्लेटो इन वर्गों के कार्यों में अहस्तक्षेप के सिद्धान्त को मानता है तो विधिगत नहीं है। क्योंकि वर्तमान में भी न्यायालय द्वारा कार्यपालिका के निर्णयों की समीक्षा की जाती है।

(Examiner note: यूनानी शब्द डिकेयोसिनी कानूनी शब्द व्यापकता के अधिक निकट न्याय विधिगत न होकर नीतिगत है।)

(Write above this line only)

15. "तुम्हें करना चाहिए, इसलिए तुम कर सकते हो।" काण्ट के इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

"Ought implies can." Explain this statement of Kant.

2 1/4

यह कांट की "कर्तव्य कर्तव्य के लिए" की अवधारणा है। कांट के अनुसार कर्तव्य की चेतना से किए गए कार्य ही शुभ एवं नैतिक हैं तथा ये ही निरपेक्ष आदेश हैं जो काल, परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति को निरपेक्ष आदेश का ही पालन करना चाहिए। कांट के अनुसार कार्यों/कर्तव्यों का मूल्यांकन परिणाम के आधार पर न करके उसके संकल्प के आधार पर होना चाहिए। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन कठोरता के साथ करना चाहिए इनमें भावनाओं का समावेश भी नहीं होना है। यह गीता के स्वधर्म पालन से संबंधित है परंतु इसमें कठोरता अधिक है।

(Examiner note: स्वतंत्रता नीतिशास्त्र की मौलिक मान्यता, समस्त संकल्प बाह्य प्रकृति द्वारा नियंत्रित है तो नैतिकता कोई अर्थ नहीं रह जाता।)

(Write above this line only)

16. "व्यक्ति के आदतन या अभ्यासजन्य कर्म नैतिकता के दायरे में आते हैं।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
"The habitual or customary actions of a person come under the ambit of morality." Explain with example.

व्यक्ति के आदतन या अभ्यासजन्य कर्म ही नैतिकता के दायरे मे आते है क्योंकि ⇒ ऐच्छिक कार्यों का मूल्यांकन ही नैतिकता मे होता है। आदतन कार्यों को मनुष्य अपनी इच्छा से करता है।

⇒ दबावरहितता – व्यक्ति अपनी आदतो को बिना किसी दबाव से करता है।

⇒ भूलवश किये गए गलत कार्यों को माफ किया जा सकता है। उन कार्यों की नैतिक मूल्यांकन नही किया जाता है।

⇒ आदतन कार्य ही व्यक्ति द्वारा बार-बार किये जाते है। अतः ये नकारात्मक होने पर समाज पर इसका लंबे तक प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार सकारात्मक कार्यों के बार-बार होने से समाज मे समरसता बढ़ती है।

(Write above this line only)

उदा० → धूम्रपान एक आदतन किया गया गलत कार्य है अतः इसकी नैतिकता को मापा जाता है।

3

शब्द सीमा तथा प्रारूप का ध्यान रखे। कॉलम से बाहर लिखने पर जाँचा नहीं जायेगा।

Part - C

Note : Answer the following questions in 100 words. Each question carries 10 marks.

नोट : निम्न प्रश्नों के उत्तर 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

1. 'नैतिक द्वंद्व या दुविधा' को परिभाषित करते हुए सरकारी संस्थानों में उत्पन्न होने वाली नैतिक दुविधाओं को लिखते हुए उनके समाधान प्रस्तुत कीजिए।

While defining 'ethical conflict or dilemma', write down the ethical dilemmas arising in government institutions and present their solutions.

5½

नैतिक द्वंद्व → यह नैतिक चिंता की अगली अवस्था है। जब किसी निर्णय को लेते समय नैतिक सिद्धान्तों में विरोधाभास उत्पन्न हो वहाँ किसी नैतिक द्वंद्व है। यह एक जटिल प्रक्रिया है।

सरकारी संस्थानों में उत्पन्न नैतिक द्वंद्व → ① व्यक्तिगत हानि बनाम नैतिकता — इस स्थिति में निर्णयकर्ता के समक्ष नैतिक निर्णय लेने पर व्यक्तिगत हानि होने की संभावना होती है। जैसे → पद से विस्थापन, आर्थिक दण्ड

② सही बनाम सही नैतिक दुविधा → इस स्थिति में निर्णयकर्ता को दो सही विकल्पों में से एक को चुनना होता है जैसे गोपनीयता बनाम पारदर्शिता।

③ संयुक्त नैतिक दुविधा → इस स्थिति में व्यक्तिगत हानि दुविधा एवं सही बनाम सही में दुविधा संयुक्त रूप से विद्यमान होती है।

नैतिक दुविधा के समाधान → ① स्वहित की बजाए परहित को वरीयता ② उच्चतर कर्तव्य के लिए निम्नतर कर्तव्य को त्यागना ③ अन्तरात्मा की आवाज से ④ लोकसंग्रह अवधारणा से ⑤ गाँधीजी के अनुसार अपने निर्णय को लेते समय अंतिम व्यक्ति (गरीब) के बारे में सोचा जाए उस पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। ⑥ संवैधानिक प्रावधान

निष्कर्ष :- नैतिक दुविधा अवश्य ही एक जटिल अवस्था है। परंतु प्रशासक को इस अवस्था में संयमित रहते हुए पूर्व साम्य अवस्था के उदाहरणों को देखते हुए निर्णय लेना चाहिए।

(Write above this line only)

अर्थ ? अवधारणा ? परिभाषा ? विवेक ध्वनि शक्तियों का प्रयोग आदेशों का पालन उपहार एवं आतिथ्य संवैधानिक मूल्य कानून के बारे में तथा दिशानिर्देश

2. बोधिसत्व की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसका महत्व उल्लेखित करते हुए वर्तमान में इसके लाभ बताइये।
Explain the concept of Bodhisattva, mention its importance and tell its benefits at present.

4

बोधिसत्व के बौद्ध धर्म की महायान शाखा से संबंधित है। उसके अनुसार व्यक्ति को स्वयं का निर्वाण को सुनिश्चित करना ही चाहिए परंतु उससे पहले उसे लोगों के निर्वाण करने में भी योगदान देना चाहिए।

अर्थ ? अवधारणा ? विवेक तथा सम्यक-ज्ञान

महत्व
(1) यह स्वहित के स्थान पर परहित को मूल्य देता है
(2) लोक कल्याण को बढ़ावा देता है → सुशासन
(3) जनता मे विश्वास पैदा करने मे महत्वपूर्ण
(4) जवाबदेहिता (लोगों के प्रति)
(5) लोकतांत्रिक अवधारणा → समाज के प्रत्येक वर्ग को निर्वाण का अधिकार
(6) समाज की उत्कर्ष की अवधारणा।

लोक कल्याण तथा लोकमांगलिक चेतना
मानवतावाद
सार्वभौमवाद
लोकोपकार

वर्तमान मे आपसी वैमनस्य, स्वहित को प्राथमिकता जैसे अनैतिक कार्यों मे वृद्धि हो रही है जैसे स्वहित के लिए - युक्रेन - रूस युद्ध, आतंकवाद घटनाएँ

बोधिसत्व की संकल्पना से समाज मे इन अनैतिक कार्यों का ह्रास कर नैतिकता की स्थापना की जा सकती है। उदा० → इंडिया द्वारा तुर्की मे भूकम्प आने पर आपसी मतभेद को त्यागकर जनकल्याण हेतु सहायता का भेजना (मिशन दोस्ती)

परिवर्त्त सिद्धांत
नि: स्वार्थ समाज सेवा
सहिष्णुता तथा करुणा

(Write above this line only)

4

3. "नैतिक कर्त्तव्यों व कानूनी दायित्वों में एकरूपता का अभाव हो सकता है।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

"There may be lack of uniformity in moral duties and legal responsibilities." Explain with example.

नैतिक कर्तव्य

संवेदना नैतिक भावना अंतःकरण की प्रेरणा या उचित कार्य प्रवृत्ति कानूनी कानूनी बंधन झूठ लोभ ईर्ष्या द्वेष नैतिक दृष्टि: झूठ बोलना अपराध

नैतिक कर्तव्य वह है जो एक विवेकशील प्राणी होने के नाते हमे करना चाहिए तथा इनकी अनुपस्थिति मे दण्ड का प्रावधान नही है। वही कानूनी दायित्व कानून के शासन मे मूलभूत है। तथा इनके उल्लंघन पर दण्ड का प्रावधान है।

→ रेल दुर्घटना होने पर पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी द्वारा रेल मंत्री होने के नाते इस्तिफा दे देना → ये उनका कानूनी दायित्व नही था क्योंकि उन्हे इसके लिए कोई प्रत्यक्ष जिम्मेदार नही ठहराता परंतु यह उनका नैतिक कर्तव्य था कि वे अपनी जवाबदेहिता सुनिश्चित कर

→ किसी अत्यंत दुर्जन व्यक्ति (बलात्कारी) को पीटना कानूनी रूप से सही नही है क्योंकि दण्ड देना न्यायलय का काम है परंतु नैतिक रूप से इसे सही कहा जाएगा।

→ नेहरू जी द्वारा अपने प्रथम मंत्रीमण्डल मे वैचारिक भेद रखते हुए भी भीमराव अम्बेडकर को शामिल किया गया ये उनपर कानूनी बाध्यता नही थी परंतु नैतिक बाध्यता थी क्योंकि वे इस योग्य थे।

→ इसरो चेयरमेन सतीश धवन द्वारा SLV की असफलता पर APJ अब्दुल कलाम को प्रेस के सामने आने देने की बजाए स्वयं आये तथा सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं ली ये कानूनी दायित्व नही था परंतु नैतिक रूप से जरूरी था। (APJ अब्दुल कलाम की आत्मकथा मे वर्णित)

निष्कर्ष

इस प्रकार नैतिक कर्तव्यो एवं कानूनी दायित्वो मे एकरूपता का अभाव हो सकता है सिविल सेवक भी अन्ततः एक व्यक्ति ही होता है जिसके कुछ नैतिक मूल्य होते है।

(Write above this line only)

4. ऋत् की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसके आयामों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए तथा ऋत किस प्रकार प्रशासनिक उत्कृष्टता को संवर्धित करता है, समझाइये।
Explaining the concept of Rit, write a short note on its dimensions and explain how Rit promotes administrative excellence.

5

प्रश्न की मूल मांग को ध्यान से पढ़े

Intro

ऋत एक अपरिमाण्य, अविश्लेष्य एवं वैदिक अवधारणा है। प्रकृति, भौतिक एवं कर्मकाण्डीय अवस्थाओं का संचालन ऋत के द्वारा ही होता है।

भौतिक व्यवस्था → प्रकृति का संचालन यथा दिन-रात का बनना, नक्षत्रों का परिक्रमा करना, सूर्योदय सूर्यास्त आदि ऋत के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

नैतिक अवस्था → ऋत के नैतिक आयाम में कारणता सिद्धान्त की व्याख्या है। कृतप्रणाश - किया हुआ कभी नष्ट नहीं होता, अकृतभ्युपगम = बिना कुछ करे कुछ प्राप्त नहीं होता। इसके अनुसार प्रत्येक कार्य के पीछे कोई कारण अवश्य होता है।

कर्मकाण्डीय व्यवस्था → इसके अंतर्गत देवताओं को खुश करने के लिए किए गए कर्मकाण्डों, यज्ञों को सम्मिलित किया गया है। ऋत का संरक्षक वरुण देवता है।

Body

→ जिस प्रकार ऋत प्रकृति और संसार के संचालन के लिए आवश्यक है। उसी प्रकार प्रशासक को भी समाज में लोकतंत्र एवं सुशासन की स्थापना हेतु अपने आधारभूत मूल्यों, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समर्पण भाव रखते हुए पालन करना चाहिए।

→ ऋत जहाँ संसार के संतुलन में आवश्यक है। वही प्रशासन, शासन के स्थायीत्व के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जनता और शासन के मध्य कड़ी होता है।

Conclusion

निष्कर्ष: ऋत प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अनुशासन एवं मूल्यों के अनुरूप व्यवहार करने को प्रेरित करती है। ताकि संतुलन की स्थापना हो।

(Write above this line only)

5. निम्न पर टिप्पणी लिखिए/Write a comment on the following-

1. करूणा का प्रशासन में महत्व/Importance of compassion in administration

2. धर्म निरपेक्ष नैतिकता व धार्मिक नैतिकता/Secular morality and religious morality

2 1/2

① करूणा का प्रशासन मे महत्व → प्रशासक को नौकरशाही मे केवल अपनी शक्तियो और अधिकारो के प्रयोग करने की बजाए इसके साथ जनता की अपेक्षाओ एंव आवश्यकताओ का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रशासक के करूणापूर्ण व्यवहार से ① जनता मे उसके प्रति विश्वास बढ़ेगा → जनसहभागिता सुनिश्चित ② प्रशासक के निर्णय के प्रभाव क्षेत्र मे वृद्धि ③ जनता उसे अपने जैसा समझेगी और अपनी वास्तविक परेशानियो से अवगत करायेगी। ④ लोकतंत्र एंव जनकल्याण हेतु कठोर प्रशासन के साथ प्रशासन मे करूणा का होना भी आवश्यक

उदा० – कलेक्टर सौरभ द्वारा जनजातीय क्षेत्र मे 'लैंग्वेज विद कलेक्टर' पहल (जनजातीय बच्चो के साथ सम्प्रेषण बढ़ाने हेतु)

"प्रशासक का आधारभूत मूल्य पिछड़े तथा कमजोर वर्ग का कल्याण जन उपयोगी कल्याणकारी कार्यक्रमो का लाभ उठाना"

2

② (धर्मनिरपेक्ष नैतिकता व धार्मिक नैतिकता) → धर्मनिरपेक्षता जहाँ सभी धर्मों के प्रति सम्मान रखते हुए राज्य को धर्म (पंथ) से पृथक करती है इसे भारतीय संविधान की प्रस्तावना मे शामिल किया गया है।

(धार्मिक नैतिकता) → समाज के सभी वर्गों के धार्मिक रितिरिवाजो मान्यताओ के प्रति सम्मान का भाव रखना। किसी धर्मविशेष के सदस्यो के प्रति घृणा व ईर्ष्या न होना।

समाज मे भातृत्व एंव समानता की स्थापना हेतु धर्मनिरपेक्ष नैतिकता के साथ धार्मिक नैतिकता का भी होना आवश्यक है।

"समानता क्रम तथा अंतर का आधार बिन्दु लिखे"

(Write above this line only)

6. श्रीमद् भगवद्गीता के दर्शन की प्रशासन में भूमिका पर लेख लिखिए।
Write an article on the role of the philosophy of Srimad Bhagavad Gita in administration.

श्रीमद् भगवद्गीता व्यक्ति के समुचित विकास को सुनिश्चित करने हेतु राह दिखाती है। इसलिए इसे पूर्ण नैतिक सिद्धान्त कहा गया है।

प्रशासन में श्रीमद् भगवद्गीता की भूमिका।

① व्यक्तिगत हित और वैश्विक हित में समन्वयकर्ता (व्यक्ति की आत्मा और वैश्विक आत्मा परमात्मा एक ब्रह्म के तत्व है)

② गीता में दी गई योग अवधारणा → कर्म योग (कर्तव्यपालन, निष्पक्षता) भक्ति योग (संवैधानिक मूल्यों के प्रति) ज्ञान योग (नैतिकता, नवाचार)

③ प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्ग → इससे प्रशासन में अनुशासन, समन्वयशीलता, कर्तव्यपालन,

④ लोकसंग्रह की अवधारणा → प्रशासक को जनकल्याण हेतु प्रेरित करती है।

⑤ निष्काम कर्मयोग → स्वकर्तव्य पालन, भौतिकवाद भ्रष्टाचार जैसे नकारात्मक मूल्यों का ह्रास;

⑥ स्वधर्म पालन → कार्यसंस्कृति में स्वच्छ प्रतिस्पर्धा, आपसी संबंधों में

⑧ श्रमविभाजन → जन्म आधारित न होकर कर्म आधारित

⑨ स्वयं के कार्यों के प्रति समर्पण से ही ईश्वर की प्राप्ति (योगः कर्मसु कौशलम्)

⑩ आपद धर्म → प्रशासन में कठोरता को कम करती है।

इस प्रकार गीता का दर्शन केवल एक धार्मिक अवधारणा न होकर व्यक्ति के बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक है। गीता में स्थितप्रज्ञ अवधारणा से प्रशासक नैतिक दुविधा को समाप्त कर उचित निर्णय ले सकता है। इस प्रकार गीता की प्रासंगिकता वर्तमान में भी है।

निःस्वार्थ कार्यवाही तथा भक्ति का मार्ग सुख तथा दुःख के प्रति उदासीनता आदेश की एकता तथा नवाचार कौशल।

(Write above this line only)

7. केस स्टडी-

आप प्रदेश के लोक निर्माण विभाग में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं, जिसके कारण सरकार के निर्णयों एवं गोपनीय सूचनाओं की जानकारी आपको पहले ही मिल जाती है। सरकार ने वर्तमान में अवसंरचना के विकास के लिये कुछ ऐसे निर्णय लिये हैं, जिनकी जानकारी यदि अवसंरचना के विकास में लगी कम्पनियों को लग जाये तो वे बड़ा लाभ कमा सकती हैं। इन कम्पनियों में से एक ऐसी है, जिसने पूर्व में सरकार के लिए काफी अच्छा एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य किया है तथा इस कम्पनी का मालिक विभाग के मंत्री का घनिष्ठ है, तथा मंत्री ने उस सूचना को अपने घनिष्ठ को देने का संकेत आपको दिया है। ऐसी स्थिति में आपके पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं तथा प्रत्येक विकल्प का परीक्षण करके बताइये कि आप कौन-सा विकल्प चुनेंगे?

Case Study-

You are a senior officer in the Public Works Department of the state, due to which you already get information about government decisions and confidential information. At present, the government has taken some such decisions for the development of infrastructure, if the companies engaged in the development of infrastructure are aware of them, then they can earn huge profits. One of these companies is such, which has done very good and quality work for the government in the past and the owner of this company is close to the minister of the department, and the minister has indicated to you to give that information to his close friend. In such a situation, what are the options available to you and after examining each option, tell which option you will choose?'

2

विकल्प उपलब्ध →

① सूचना उस कम्पनी के मालिक को दे दें

② सूचना को गोपनीय ही रखा जाए।

~~मैं अपेक्षकीय~~ मैं सूचना को गोपनीय ही रखूंगी ताकि बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनी रहे और प्रत्येक कम्पनी को बराबर मौका मिले।

सबसे बेहतरीन विकल्प यही है कि संकेत को अनदेखा करके कार्य की गोपनीयता को पूर्ण रूप से बरकरार रख रखते हुए अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूपेण निर्वहन किया जा सके।

हिन्दी व्याकरण- शब्द युग्म, वाक्यांश के लिए एक शब्द व प्रारूप लेखन-अधिसूचना

1. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थ लिखिए-

(i) अमल - अम्ल अंक

(ii) इंदिरा-इंद्रा

(iii) पायस-पायसा

(iv) भट - भट्ट

(v) शमीर-समीर

2. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(i) जो आज तक से संबंध रखता है अंक -

(ii) जिस भूमि के दोनों ओर जल हो

(iii) जो जाकर पुनः आ गया हो

(iv) प्रातः काल गाया जाने वाला एक राग

(v) विभिन्न वनस्पति और औषधियों से तैयार पदार्थ

3. सचिव, कार्मिक विभाग, राजस्थान सरकार की ओर से राजकीय कार्यालयों में कार्मिकों की उपस्थिति बायोमैट्रिक मशीन द्वारा अनिवार्य करने बावत् अधिसूचना जारी कीजिए। अंक- 10

Voice-Active & Passive and Letter Writing

(A) Identify the error and rewrite the correct form of the following sentences: (Q. No. 1-10) Marks 10

1. He will be punish for his misbehaviour.

2. Spectacles were gave to me by him.

3. Billiards are play by them.

4. Let a book be bring.

5. The dinner was ready before we arrived.

6. The sun is risen.

7. Whom do he look for?

8. This watch need be not wounded.

9. Surely the lost child must have found by now.

10. One must keep his promises.

(B) Write a letter to the Superintendent of Police of your district criticising the rude behaviour of a police official.

Or

Write a letter to the Editor, the Indian Express, Jaipur about transport and traffic problems of Jaipur.

Marks 10

Space for Rough Work